कोटा क्षेत्र के शिल्प में व्यन्तर देव

डॉ. मोनिका गौतम

देवत्व की सीमा तक पहुँचने वाली शक्तियाँ जो देव नहीं परन्तु अपना पृथक् महत्वपूर्ण व्यक्तित्व रखती हैं, वे व्यन्तर देवताओं के रूप में प्रसिद्ध हैं। विष्णु पुराण में इन्हें ही देवयोनियाँ माना गया है और आठ प्रकार की देवयोनियों में सिद्ध, गुह्यक, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प, विद्याधर, पिशाच आदि की गणना की गई है।[1]

कोटा क्षेत्र में हमें इनमें से जिनकी प्रतिमाएँ प्राप्त होती हैं, उनका विस्तृत विवेचन इस प्रकार है –

(1) गंधर्व

अथर्ववेद में गंधर्वों की गणना हुई है।[2] शतपथ ब्राह्मण में गन्धर्वों को वरूण राजा की प्रजा कहा गया है।[3] यज्ञ में इन्द्र को सोम आहूति देने के लिए सोम गंधर्वों से ही खरीदा जाता था।[4]

विष्णु पुराण में कहा गया है ब्रह्मा के गाते समय उनके शरीर से गन्धर्व उत्पन्न हुए। वाणी का उच्चारण करते हुए उत्पन्न होने के कारण वे गन्धर्व कहलाए।[5]

मंदिर के मंडोवर में प्रमुख देवों की ताखों, अप्सरा, व्यालादि के अलंकरण के ऊपर दूसरी पंक्ति में गन्धर्व युगलों को उत्कीर्ण किया जाता है। गंधर्व आकृतियाँ सामान्यतः जंघा तथा उद्गम की लम्बी पट्टिका पर, प्रमुख ताखों की ऊपरी भाग में तथा स्तम्भों के ब्रैकेट पर अंकित रहती हैं। बाड़ोली के घटेश्वर महादेव मंदिर के गर्भगृह के वितान के किनारे पर गंधर्व आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। यहाँ घुँघराले केशों वाला गंधर्व कर में वीणा लिए उसे बजाता हुआ अंकित है। यह श्रीमद् भागवत्[6] के विवरण पर आधारित वीणावादक गंधर्व का उत्कृष्ट अंकन है।

गंधर्व युगल

भण्डदेवदा मंदिर, रामगढ़ के मंडप के स्तम्भों के ब्रैकेट पर गंधर्व युगलों की आकृतियाँ उकेरी हुई हैं। गंधर्व अपना एक हस्त वक्ष पर रखे एवं दूसरे हस्त को कर्ण के पास रखते हुए कोई मधुर तान छेड़ता हुआ प्रतीत होता है एवं उसके पास गंधर्व पत्नी (अप्सरा) झूमती हुई नृत्य कर रही है।[7] यहीं के एक अन्य स्तम्भ के ब्रैकेट में गंधर्व बाँसुरीवादन कर रहा है और गंधर्वप्रिया अपने एक हस्त को वक्ष पर एवं दूसरे को अपनी ठोड़ी पर रखे बाँसुरी की धुन पर खोई हुई अंकित की गई है। यह दृश्यांकन अम्बिका मंदिर, जगत (9वीं शताब्दी ई.) पर अंकित बाँसुरीवादन करते हुए गंधर्व युगल के शिल्पांकन से पर्याप्त साम्य रखता है।[8]

(2) विद्याधर

विद्याधर उड़ते हुए, हस्त में पुष्प मालाएँ या तलवार लिए आकाश में घूमते हुए दैवीय स्वरूप हैं। इन्हें पुष्पों व मालाओं से विशेष प्रेम रहता है। किसी की सफलता पर ये पुष्पवर्षा करते हैं। विष्णु आदि देवताओं की प्रतिमाओं के ऊपर पुष्पवर्षा करते हुए इनका अंकन किया जाता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[9] में इनका वर्णन उड़ती हुई आकृति के रूप में हुआ है। इसके अनुसार विद्याधर अपनी स्त्रियों (विद्याधरियों) के साथ माला लिए हुए प्रदर्शित किए जाने चाहिए। इनका शरीर सभी आभूषणों से सज्जित रहता है। इन्हें पृथ्वी या आकाश में खड्ग लिए हुए भी प्रदर्शित किया जाता है।

राजकीय संग्रहालय, कोटा में संरक्षित[10] एवं कृष्णविलास से प्राप्त विद्याधर मूर्ति में वे हस्त में माला लिए हुए अंकित हैं। इसी आशय की एक अन्य मूर्ति भी संख्यांक 320 पर यहाँ संरक्षित है।

विद्याधर युगल

राजकीय संग्रहालय, कोटा में संरक्षित[11] एवं कृष्ण विलास से प्राप्त एक मूर्ति में विद्याधर युगल प्रदर्शित है। हस्त में माला लिए विद्याधर नृत्य मुद्रा में उत्कीर्ण है और विद्याधरी की ओर दृष्टिगत है। गड़गच, अटरू के ध्वंसावशेषों में खण्डित वास्तुखण्डों पर उत्कृष्ट विद्याधर आकृतियों का अंकन है।(चित्र सं. 1)

(3) किन्नर या ईहामृग

किन्नर का अर्थ है विकृत पुरूष। ये पशु जैसे शरीर वाले, कटि के ऊपरी भाग से मानव समान होते हैं। मानव–पशु, मानव–पक्षी, पक्षी–पशु आदि मिश्रित आकृतियाँ ''ईहामृग'' या ''किन्नर'' कहलाती हैं। सुन्दर नेत्रों वाले किन्नर संगीतप्रिय होते हैं, ये देवों का यश–गान करते हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[12] में मधुर स्वर युक्त संगीत का गायन करने वाले किन्नरों के आह्वान

का विधान दिया गया है। ये विवेच्य क्षेत्र के मंदिरों के द्वार, उदुम्बर, वितान आदि पर प्रदर्शित किए गए हैं।

(4) कीचक

मंदिर के स्तम्भ तथा वितान के मध्य निर्मित भार साधक गठीले बदन के आवक्ष गण कीचक कहलाते हैं। वितान, स्तम्भों के शीर्ष, किनारों पर निर्मित कीचक अपनी बहुभुजाओं में ऊपर के दो हाथों से भार को संभालने का कार्य करते हैं तथा नीचे के हाथों में आयुध व वाद्ययंत्र लिए मंदिर को कलात्मक रूप देते हैं।

राजकीय संग्रहालय कोटा में संरक्षित एवं गांगोबी से प्राप्त एक वास्तुखण्ड[13] पर दो कीचकों का अंकन है। 9वीं शताब्दी ई. के इस वास्तुखण्ड के दोनों किनारों पर दो कीचकों की आकृतियाँ हैं। घुँघराले केश एवं गठीले बदन वाले यह कीचक छनवीर धारण किए हुए हैं। एक चतुर्भुज कीचक पद्मासन में बैठा हुआ दो हाथ अपनी जंघा पर टिकाए हुए है जबकि अन्य दो हाथों से अपने ऊपर वास्तुखण्ड का भार साधे हुए है। दूसरा कीचक अतिभंग मुद्रा में अपने घुटनों को मोड़कर अपने ऊपर के हाथों से भार को साधे हुए है। भण्डदेवरा मंदिर के स्तम्भ एवं वितान के मध्य तथा पालेश्वर महादेव, हरिपुरा के स्तम्भ एवं वितान के मध्य ग्रीवा में हार, वक्ष पर छनवीर एवं कुण्डल पहने हुए कीचकों की सुन्दर आकृतियाँ दिखाई देती हैं। कृष्णविलास के चौखम्भा मंदिर के स्तम्भों एवं वितान के मध्य उत्कीर्ण कीचकों को दाढ़ीयुक्त उत्कीर्ण किया गया है, जो एक विलक्षण तथ्य है। मुख से ये किसी यूनानी देवता से साम्यता का आभास देते हैं(चित्र सं. 2)। दोनों ऊर्ध्व हस्तों से भार साधे हुए ये कीचक अपने अधः हस्त द्वारा किसी मुद्रा को व्यक्त कर रहे हैं। किसी कीचक ने अपने वाम दक्षिण हस्त में गदा समान कोई वस्तु भी धारण कर रखी है।

(5) यक्ष

ऋग्वेद में यक्ष पूजा के विषय में अनेक स्थान पर उल्लेख हुआ है। मित्र और वरूण देव को यक्षों के प्रभाव से स्वतन्त्र रहने की प्रार्थना की गई है।[14] अथर्ववेद में इनके लिए ''इतर जनाः'' विशेषण प्रयुक्त हुआ है। जैन साहित्य में यक्षों को देवता मानकर उन्हें 'शासन देवता' कहा गया है।

मनसार[15] यक्षों को श्याम तथा पीत वर्ण का बतलाता है। हेमाद्रि[16] के अनुसार यक्ष तुण्डिल, दो भुजा वाले, मदिरा पीने से उन्मत्त तथा देखने में भयानक होते हैं। राजकीय संग्रहालय, कोटा में संरक्षित[17] एक यक्ष मूर्ति में नग्न यक्ष प्रलम्भपाद आसन में बैठे हुए है। यह ग्रीवा में एक कवच समान चौड़ा हार पहने हुए है।

(6) गण

वायुपुराण[18] के अनुसार क्रोध की पुत्री तथा पुलह ऋषि की पत्नि भूति ने लक्ष पुत्रों को जन्म दिया। ये सभी बालक ब्रह्मचारी रहकर शिव के अनुचर बन गए और ''शिवगण'' कहलाए। इसके अनुसार गण श्यामवर्ण, स्थूल एवं भीमकाय अथवा पीतवर्ण, दुबले व क्षीणकाय अथवा रक्तवर्ण व तुन्दिल, बौने व कुबड़े होते हैं। ये विचित्र प्रकार की वेशभूषा धारण करते हैं अथवा पूर्ण दिगम्बर रहते हैं। गड़गच ध्वंसावशेषों में खण्डित वास्तुखण्डों पर कण्ठहार, उदरबंध, यज्ञोपवीत आदि अलंकरणों से सुशोभित हाथ में गदा व तलवार धारण किये हुए गणों का अंकन है। झालावाड़ संग्रहालय में संख्यांक 476 पर दो शिवगणों की एक नृत्यरत प्रतिमा सुरक्षित है। यहीं पर संरक्षित एक वास्तुखण्ड (प्रवेशद्वार के खण्डित भाग) पर बाँसुरीवादन करते हुए वृहदोदर, लम्बे कर्णों वाले गण उत्कीर्ण हैं।(चित्र सं. 3)

(7) कामदेव

भण्डदेवरा के मण्डप स्तम्भ पर एक ब्रेकेट में धनुषधारी कामदेव का उत्कृष्ट अंकन है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 5वीं से 13वीं शताब्दी ई. में विवेच्य क्षेत्र में व्यंतर देवों के रूप में मंदिरों की प्रवालों पर उच्चतम कला का प्रदर्शन किया गया।

असिस्टेंट प्रोफेसर, एस एस जैन सुबोध, पी जी कॉलेज, जयपुर

संदर्भ संकेत

1. सिद्धगुह्यक गन्धर्व यक्ष राक्षस पन्नगाः।
विद्याधरा पिशाचाश्च निर्दिष्टा देवयोनयः।। – विष्णुपुराण, पृ. 243

2. अथर्ववेद, अध्याय 8, श्लोक 8215
3. शतपथ ब्राह्मण, IV, अध्याय 3, श्लोक 7–8
4. ऐतरेय ब्राह्मण, I, अध्याय 27, श्लोक 1
5. विष्णु पुराण, I, अध्याय 5, श्लोक 46–47
6. गन्धर्व गायन विधा के अतिरिक्त वाद्य विधा में भी निपुण होते हैं। वे मृदंग, वीणा, ढोल आदि वाद्य बजा लेते हैं। – श्रीमद् भागवत्, XII, अध्याय 8, श्लोक 24
7. चित्र सं. 61
8. ढाकी एम.ए., ''गंधर्व फिगर्स फ्रॉम ओसियां एण्ड जगत्'', जर्नल ऑफ द ओरियण्टल इंस्टीट्यूट, एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा, वोल्यूम XX, नं. 2, दिसम्बर 1970, पृ 144–148 एवं चित्र 10
9. रूद्रप्रमाणाः कर्त्तव्यस्तथा विद्याधराः नृप।
   सपत्नीकाश्च ते कार्या माल्यालङ्कारधारिणः।।
   खड्गहस्ताश्च ते कार्या गगने वायवा भुवि।(विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अध्याय 42, श्लोक 9–10)
10. राजकीय संग्रहालय, कोटा, संख्यांक 491; कृष्णविलास, 10वीं शताब्दी ई.
11. राजकीय संग्रहालय, कोटा, संख्यांक 387; कृष्णविलास, 10वीं शताब्दी ई.
12. विष्णुधर्मोत्तरपुराण, अध्याय 103, श्लोक 18
13. राजकीय संग्रहालय, कोटा, संख्यांक 280; गांगोबी, 9वीं शताब्दी ई.
14. ऋग्वेद, मण्डल 7, सुक्त 6, श्लोक 1–5
15. मानसार अध्याय 15, श्लोक 23
16. हेमाद्रि, चतुर्वर्गचिंतामणि, पृ. 138
17. राजकीय संग्रहालय, कोटा, संख्यांक 415; कृष्णविलास 10वीं शताब्दी ई.
18. वायुपुराण, अध्याय 69, श्लोक 224–56

चित्र

1 विद्याधर–युगल, गड़गच ध्वंसावशेष, अटरु

2 कीचक चौखम्बा मंदिर, कृष्णविलास

3 शिव गण, राजकीय संग्रहालय, झालावाड़